बंगाल के पाल वंश का राजनीतिक इतिहास : एक संक्षिप्त अध्ययन

आनंद कुमार सिंह (शोध छात्र)
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

सारांश-

हर्षवर्द्धन की मृत्यु के पश्चात् उत्तर भारत की राजनीतिक स्थिति विकेंद्रीकरण की ओर उन्मुख हुयी । राजनीतिक एकता एवं केन्द्रीय शक्ति के अभाव में धीरे-धीरे कई क्षेत्रीय शक्तियां अस्तित्व में आने लगी, जिससे पूरे उत्तर भारत में मत्स्यन्याय की समस्या प्रारम्भ हुई । मत्स्यन्याय की स्थिति को समाप्त करने हेतु बंगाल की जनता ने गोपाल नामक व्यक्ति को अपना राजा चुना । प्रस्तुत आलेख में बंगाल की यथास्थिति, पाल वंश की स्थापना एवं उसके संस्थापक का वर्णन किया गया है । पूर्वी भारत में स्थित बंगाल छठीं शताब्दी ई० के पूर्वार्द्ध में मगध का ही अंग था । प्रस्तुत आलेख में बंगाल की भौगोलिक एवं राजनीतिक स्थिति की चर्चा की गयी है । पाल वंश की स्थापना गोपाल ने की, परन्तु इस वंश की प्रतिष्ठा को चरम पर पहुँचाने में उसके उत्तराधिकारियों ने अहम् भूमिका निभाई । प्रस्तुत आलेख पाल वंशीय शासकों की राजनीतिक एवं सैनिक उपलब्धियों पर प्रकाश डालता है । अधिकतर पाल शासक बौद्ध धर्मानुयायी थे । विभिन्न बौद्ध विहारों तथा मंदिरों के निर्माण में पाल शासकों के योगदान की चर्चा प्रस्तुत आलेख में की गयी है । परवर्ती शासकों की अयोग्यता के कारण पाल साम्राज्य धीरे-धीरे अपने पतन की ओर अग्रसर हुआ । प्रस्तुत आलेख में पाल साम्राज्य की प्रतिष्ठा में आई गिरावट एवं उनके पतन की भी चर्चा की गयी है । पाल साम्राज्य के पतन के कुछ अन्य कारण भी है, जैसे- पाल साम्राज्य पर समय-समय पर होने वाले चालुक्य, कलचुरी तथा समकालीन कुछ अन्य शासकों के आक्रमण । साथ ही साथ स्थानीय सामंतों का विद्रोह भी पाल साम्राज्य के पतन का एक प्रमुख कारण था। प्रस्तुत आलेख इस विषय की प्रासंगिगता को भी उठाता ।

मूलशब्द- अराजकता, चरमोत्कर्ष, मत्स्यन्याय, सुद्रढ़, प्रतिष्ठा, चतुर्दिक ।

परिचय-

आठवीं सदी में हर्ष की मृत्यु के पश्चात् उत्तर भारत अराजकता एवं अव्यवस्था का केंद्र बन गया । उत्तर भारत की राजनीति में कई छोटी-छोटी शक्तियां अस्तित्व में आयीं, परन्तु किसी शक्तिशाली एवं सुदृढ़ शक्ति के अभाव में उत्तर भारत का केन्द्रीयकरण संभव न हो सका । समाज में व्याप्त अराजकता को समाप्त करने हेतु पूर्वी भारत में बंगाल में एक दृढ़ सत्ता का उदय हुआ, जिसने समाज में व्याप्त आराजकता को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । पूर्वी भारत में बंगाल पर पालों ने अपनी सत्ता स्थापित की, गोपाल नामक व्यक्ति ने ७५० ई० में इस वंश को स्थापित किया । बंगाल में फैली अराजकता के कारण समाज में मत्स्यन्याय की स्थिति उत्पन्न हुयी, जिसे समाप्त करने हेतु जनता ने सर्वसम्मति से गोपाल को अपना राजा चुना । बंगाल में पालों की उत्पति को लेकर यह

धरणा थी कि वे किसी हीन कुल अथवा अप्रशस्त विवाह सम्बन्ध से उत्पन्न हुए थे । व्यासचरित में उन्हें सबसे हीन क्षत्रीय तथा आर्यमंजूश्रीमूलकल्प में दास कुल का कहा गया है । धीरे-धीरे जब पाल शासक एक प्रमुख राजनीतिक सत्ता के रूप में अस्तित्व में आये तो उन्हें क्षत्रीय स्वीकार कर लिया गया । गोपाल के उत्तराधिकारियों ने पाल साम्राज्य को विस्तृत कर, बंगाल को एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में स्थापित किया । पाल वंश में कुल २३ शासक हुए, जिन्होंने चार शताब्दियों तक बंगाल पर शासन किया । ८वीँ शताब्दी में कन्नौज एक महत्वपूर्ण नगर के रूप में उभरा । कनौज की सत्ता के लिए त्रिकोणात्मक संघर्ष पालों के ही समय में शुरू हुआ । यह संघर्ष पाल शासकों, गुर्जर-प्रतिहार तथा राष्ट्रकूट शासकों के मध्य हुआ । पाल शासकों ने अपनी क्षमता एवं कुशलता से बंगाल को राजनीतिक रूप से सशक्त बनाने में हर संभव प्रयास किया ।

पृष्ठभूमि

बंगाल को सशक्त एवं सुदृढ़ बनाने में पाल शासकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गुप्तों के काल में बंगाल मगध का ही हिस्सा था, उनके पतन के पश्चात् बंगाल मगध से अलग हो गया । गुप्तों की सत्ता समाप्त होने के पश्चात् उत्तर भारत में हर्षवर्द्धन का वर्चस्व स्थापित हुआ । हर्षवर्द्धन का समकालीन बंगाल का शासक गौड़वंशीय शशांक था, जिसने बंगाल को एक सुदृढ़ राष्ट्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । गौड़ नरेश शशांक की मृत्यु के पश्चात् बंगाल की राजनीतिक एकता विनष्ट हो गयी, जिससे पूरा बंगाल अराजकता एवं अशांति की ग्रस्त में आ गया । सम्राट हर्षवर्द्धन ने बंगाल पर आक्रमण कर बंगाल को अपने अधिकार में ले लिया । तत्पश्चात् उत्तरी बंगाल पर शैल शासकों ने शासन प्रारम्भ किया तथा दक्षिण भारत पर हर्षवर्द्धन ने अपनी सत्ता स्थापित की । कश्मीर के शासक ललित्यादित्य, मुक्तापीड और कन्नौज नरेश यशोवर्मन समय-समय पर बंगाल पर आक्रमण करते रहे । कामरूप नरेश हर्षदेव ने भी बंगाल को विजित कर कुछ दिनों तक बंगाल पर शासन किया । बंगाल में लगातार हो रहे आक्रमणों से फैली अशांति एवं अराजकता से वहाँ मत्स्यन्याय की समस्या उत्पन्न हुई । मत्स्यन्याय से त्रस्त बंगाल की जनता ने गोपाल नामक व्यक्ति को अपना राजा चुना । गोपाल ने बंगाल में पाल वंश की स्थापना की । पाल वंश की उत्पत्ति तथा उनके वंशजों के विषय में कोई भी महत्वपूर्ण जानकारी नहीं प्राप्त होती । खालिमपुर अभिलेख में गोपाल के पिता का नाम वप्यट और पितामह का नाम दायितविष्णु वर्णित है । अन्य किसी पाल अभिलेख में इनकी चर्चा नहीं मिलती है ।

७५० ई० में गोपाल नामक व्यक्ति ने बंगाल में पाल साम्राज्य की स्थापना की । पाल वंश का विस्तृत इतिहास हमें समकालीन साहित्यों एवं पालों के अभिलेखों से पता चलता है । पाल वंश के प्रमुख अभिलेख निम्न हैं-

1. धर्मपाल का खालिमपुर अभिलेख
2. देवपाल का मुंगेर अभिलेख
3. नारायणपाल का बादल स्तम्भ लेख
4. महिपाल-I का बाणगढ़ तथा मुजफ्फरपुर से प्राप्त अभिलेख

साथ ही समकालीन गुर्जर-प्रतिहार तथा राष्ट्रकूट अभिलेखों से भी पाल वंश का इन राजवंशों के साथ संबंधों की जानकारी मिलती है।

गोपाल–

शशांक की मृत्यु के पश्चात् बंगाल में व्याप्त अराजकता से मुक्ति पाने हेतु सामान्य जनता ने गोपाल को अपना राजा चुना । खालिमपुर अभिलेख में वर्णित है कि 'मत्स्यन्याय से छुटकारा पाने के लिये प्रकृतियों ने गोपाल को लक्ष्मी की बांह ग्रहण करायी'। शासक बनने के पश्चात् गोपाल की राजनीतिक उपलब्धियों के विषय में कुछ भी स्पष्ट ज्ञात नहीं है । पाल वंश के ताम्रफलकाभिलेखों में यह वर्णित है कि गोपाल ने समुद्रपर्यंत पृथ्वी जीती । गोपाल के विषय में यह कथन सत्य नहीं प्रतीत होता, क्योंकि इस छोटी सी प्रशस्ति से यह निर्णय नहीं निकाला जा सकता कि वह समस्त पृथ्वी का विजेता था । गोपाल की राजनीतिक और सैनिक उपलब्धियों के विषय में कोई भी प्रमाणित साक्ष्य उपलब्ध नहीं है । गोपाल के विषय में निश्चित रूप से केवल इतना ही कहा जा सकता है कि, उसने बंगाल में फैली अव्यवस्था एवं अराजकता का अंत कर पाल वंश की नींव डाली तथा समस्त बंगाल में शांति स्थापित की । मृत्यु के पश्चात् गोपाल ने अपने उत्तराधिकारियों के लिए एक सुदृढ़ साम्राज्य छोड़ा, जिसको उसके उत्तराधिकारियों ने राजनीतिक उत्कर्ष की पराकाष्ठा पर पहुँचाया । गोपाल बौद्ध धर्म का अनुयायी था । तारानाथ में वर्णित है कि गोपाल ने ओदंतपुरी नामक स्थान पर नालंदा विहार की स्थापना करवाई ।

धर्मपाल–

बंगाल की सत्ता एक सुव्यवस्थित राज्य के रूप में धर्मपाल को उत्तराधिकार में प्राप्त हुआ । यह पाल वंश का महत्वपूर्ण शासक था । धर्मपाल के राज्यारोहण की तिथि का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं प्राप्त है । धर्मपाल के समकालीन गुर्जर-प्रतिहार शासकों, वत्सराज और नागभट्ट-II तथा राष्ट्रकूट शासकों ध्रुव और गोविन्द-III के आधार पर धर्मपाल की शासनावधि जानी जा सकती है । परिणामस्वरूप धर्मपाल के राज्यारोहण की तिथि लगभग ९वीं शती के अंतिम चतुर्थांश और नवीं के प्रथम चतुर्थांश के मध्य रहा होगा । धर्मपाल राजनैतिक दृष्टि से बहुत ही महत्वाकांक्षी शासक था, उसने अपना साम्राज्य उत्तर भारत में विस्तृत किया । उत्तर भारत में व्याप्त अराजकता का लाभ उठाकर उसने अपना पहला आक्रमण कन्नौज पर किया। तत्कालीन उत्तर भारत में कन्नौज राजनीतिक दृष्टि से सर्वप्रमुख नगर था अर्थात उत्तर भारत का राजनीतिक केंद्र कन्नौज ही था । धर्मपाल का समकालीन कन्नौज का शासक इंद्रायुद्ध था । धर्मपाल ने कन्नौज के शासक इन्द्रायुद्ध को परास्त कर कन्नौज पर अधिकार कर लिया, तथा अपने प्रतिनिधि के रूप में इन्द्रायुद्ध के पुत्र चक्रायुद्ध को गद्दी पर बैठाया । चक्रायुद्ध पूरी तरह से धर्मपाल पर आश्रित था । उत्तर भारत के अन्य शासकों ने चक्रायुद्ध को इतनी सरलता से कन्नौज का शासक स्वीकार नहीं किया । पाल वंश के अभिलेख में वर्णित है कि, धर्मपाल ने कुरु, यदु, यवन, अवन्ति, गांधार, कीर, भोज, मत्स्य और मद को परास्त कर चक्रायुद्ध को कन्नौज का शासक स्वीकारने के लिए विवश किया । धर्मपाल ने अपनी कौशलता एवं क्षमता का प्रयोग कर बंगाल के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया ।

कन्नौज गंगा के व्यापारिक मार्ग पर स्थित था, जिससे कन्नौज राजनीतिक एवं व्यवसायिक रूप से महत्वपूर्ण था । दक्षिण और उत्तर भारत की सभी शक्तियां कन्नौज पर अपनी सत्ता स्थापित करना चाहती थी । कन्नौज के लिए संघर्ष धर्मपाल के ही समय प्रारम्भ हुआ । उस समय उभरती हुयी तीन सत्ताएं पूर्व में बंगाल के पाल वंश, पश्चिम में भिन्माल के गुर्जर-प्रतिहार तथा दक्षिण भारत में राष्ट्रकूट वंश जो कन्नौज पर अपनी सत्ता स्थापित करने हेतु आपस में संघर्ष करते रहे । सर्वप्रथम गुर्जर-प्रतिहार शासक वत्सराज ने कन्नौज पर आक्रमण किया, जिसमें चक्रायुद्ध एवं धर्मपाल पराजित हुए । विवश होकर धर्मपाल ने वत्सराज के खिलाफ राष्ट्रकूट शासक ध्रुव से सहायता मांगी । ध्रुव ने भिन्माल पर आक्रमण किया जिसमें वत्सराज पराजित हुआ तथा कन्नौज छोड़कर वापस चला गया ।

कन्नौज की सत्ता चक्रायुद्ध एवं धर्मपाल को सौंप ध्रुव दक्षिण भारत लौट आया । राष्ट्रकूट शासक ध्रुव की मृत्यु ७८० में हुयी । ध्रुव की मृत्यु के पश्चात् राजगद्दी पर बैठने हेतु राष्ट्रकूट राष्ट्र में गृह कलह प्रारम्भ हो गया, जिससे राष्ट्रकूट शक्ति निर्बल पड़ने लगी । इधर भिन्नमाल के शासक वत्सराज की भी मृत्यु हो गयी, तत्पश्चात् भिन्माल की सत्ता की बागड़ोर नागभट्ट-II ने संभाली । शासक बन्ने के उपरांत नागभट्ट-II ने कनौज पर आक्रमण किया, जिसमें चक्रायुद्ध एवं धर्मपाल परास्त हुए । राष्ट्रकूट वंश का अगला शासक गोविन्द-III बना । गोविन्द-III ने भिन्माल पर आक्रमण किया, जिसमें नागभट्ट-II पराजित हुआ । नागभट्ट को परास्त करने के पश्चात् गोपाल-III आक्रमण करता हुआ हिमालय तक आगे बढ़ा । कुछ समय के लिए गोपाल-III की शक्ति पूरे भारत में सर्वप्रधान हो गयी । यहाँ तक की धर्मपाल और चक्रायुद्ध भी उसकी अधीनता स्वीकारने लगे । धर्मपाल का शासन अब केवल मगध एवं बिहार तक सीमित हो गया । ८१० ई० में धर्मपाल की मृत्यु हो गयी । धर्मपाल बौद्ध धर्म का अनुयायी था, उसने विक्रमशिला विहार की स्थापना करवाई । जो की शिक्षा एवं बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र बना । धर्मपाल एक महान विजेता, कुशल कूटनीतिक और सफल शासक था । उसने परमेश्वर, परमभट्टारक और महाराजाधिराज की उपाधियाँ धारण की ।

देवपाल-

देवपाल, पाल वंश का तृतीय शासक बना जो की इस वंश का सबसे बड़ा विजेता था । देवपाल की विजयों का उल्लेख मुंगेर अभिलेख, नारायणपाल के बादल अभिलेख और भागलपुर से प्राप्त अभिलेख में हुआ है । अभिलेखों में उसका वर्णन एक साम्राज्यवादी के रूप में किया गया है । देवपाल के सेनापति ने असम और उड़ीसा पर विजय प्राप्त कर अपना साम्राज्य विस्तृत किया । कन्नौज को लेकर संघर्ष देवपाल के समय में भी चलता रहा । गोविन्द-III की मृत्यु के पश्चात् राष्ट्रकूट राज्य में फैली अशांति का लाभ देवपाल ने उठाया । मुंगेर से प्राप्त ताम्रफलकाभिलेख में कहा गया है, कि उसकी विजयनी सेनाओं ने विन्ध्यगिरी और कम्बोज तक अभियान किया । उल्लिखित है कि देवपाल का शासन रामचंद्र द्वारा बनाये गये सेतु (रामेश्वर) के पास तक था । एक अन्य अभिलेख में उत्कीर्ण है कि अपने मंत्रियों दर्भपाणि तथा केदार मिश्र की नीतियों से प्रेरित होकर देवपाल ने उत्कल जाति को मिटा दिया तथा हूणों, द्रविड़ तथा गुर्जरों का भी दंभ चूर कर दिया । भागलपुर अभिलेख में वर्णित है कि देवपाल के भाई एवं सेनापति जयपाल के सामने उत्कल का राजा अपनी राजधानी छोड़कर भाग गया । प्राग्ज्योतिष के राजा ने देवपाल की अधीनता स्वीकार ली, तथा उसकी आज्ञाओं को सर्वोपरि मानते हुए अपने राज्य पर शासन किया । देवपाल ने अपनी राजनीतिक और सैनिक प्रतिष्ठा का चतुर्दिक विकास किया । अब उसका साम्राज्य हिमालय से विन्ध्य तक तथा बंगाल की खाड़ी से अरब सागर तक विस्तृत हो गया ।

देवपाल का समकालीन गुर्जर-प्रतिहार शासक क्रमशः नागभट्ट-II, रामभद्र और मिहिरभोज थे । कन्नौज को पालों का संघर्ष गुर्जर-प्रतिहार एवं राष्ट्रकूटों से देवपाल के समय में भी होता रहा । देवपाल की सेनायें दक्षिण में द्रविड़ प्रदेश और उत्तर में तिब्बत तक कूच की, उन्होंने राष्ट्रकूटों और गुर्जर-प्रतिहार को अपने ही क्षेत्रों से आगे नहीं बढ़ने दिया । विदेशी शासकों से भी देवपाल के कूटनीतिक सम्बन्ध थे । जिनमें जावा एवं सुमात्रा के नरेश प्रमुख हैं । नालंदा ताम्रपत्रों से पता चलता है कि शैलेन्द्र वंश के शासक बालपुत्रदेव के अनुरोध पर देवपाल ने राजगृह में चार और गया में एक गाँव दान दिया, बालपुत्रदेव को नालंदा के समीप एक बौद्ध विहार बनवाने की अनुमति प्रदान की तथा मद्स्वरूप धन भी दान में दिया । देवपाल बौद्ध धर्मानुयायी था, उसने नालन्दा एवं विक्रमशिला की मरम्मत करवाई तथा अनेकों बौद्ध मंदिरों एवं विहारों को दान दिया । तारानाथ

देवपाल को बुद्ध धर्म का पुनर्संस्थापक कहते थे । देवपाल की मृत्यु की निश्चित तिथि का कोई प्रमाणिक साक्ष्य उपलब्ध नहीं है ।

नारायणपाल –

देवपाल के पश्चात् पाल वंश का शासक नारायणपाल हुआ । नारायणपाल से पहले कई शासकों ने पाल वंश की सत्ता सम्भाली, परंतु उनकी शासनावधि अत्यंत अल्प थी । नारायणपाल शांत प्रकृति का कमजोर शासक था, परिणामस्वरूप उसकी अधिसत्ता मानने वाले कामरूप और उड़ीसा जैसे राज्य स्वतंत्र हो गये । शासनकाल के प्रारम्भिक वर्षों में अंग तथा मगध नारायणपाल के अधिकार में थे, परंतु शासन के अंतिम वर्षों में उसके राज्य के अधिकांश क्षेत्र गुर्जर-प्रतिहार राजा मिहिरभोज और महेन्द्रपाल के आक्रमणों के परिणामस्वरूप हाथ से निकल गये । महेन्द्रपाल की मृत्यु के उपरांत प्रतिहार साम्राज्य की अवनति प्रारम्भ हो गयी, जिसका लाभ उठाकर नारायणपाल ने अपने खोये हुए क्षेत्रों को पुनः अपने अधीन कर लिया । अतः अपने शासनकाल के अंतिम दिनों में नारायणपाल अपने पैतृक क्षेत्रों को पुनः प्राप्त करने में सफल हुआ ।

नारायणपाल शैव धर्म का अनुयायी था । अपने शासनकाल में नारायणपाल ने १००० शैव मंदिरों का निर्माण करवाया था । ९०० ई० में नारायणपाल की मृत्यु हो गयी ।

महीपाल-I

नारायणपाल के पश्चात् पाल वंश की सत्ता क्रमशः राज्यपाल, द्वितीय गोपाल एवं द्वितीय विग्रहपाल ने संभाली । इन शासकों की शासनावधि अत्यंत अल्प थी । द्वीतीय विग्रहपाल के पश्चात् उसका पुत्र महीपाल-I शासक बना । महीपाल के राज्यारोहण के समय पाल साम्राज्य अपने सबसे बुरे दौर से गुजर रहा था, क्योंकि द्वीतीय गोपाल एवं द्वीतीय विग्रहपाल की निर्बलता के कारण पाल साम्राज्य अब केवल मगध तक ही सिमट कर रह गया । सत्ता सँभालते ही महीपाल ने पाल साम्राज्य की खोयी प्रतिष्ठा पुनः स्थापित करने का हर सम्भव प्रयास किया । महीपाल के अभिलेखों से यह पुष्टि होती है कि उसने अपने शासन के तीसरे-चौथे वर्षों में कोमिल्ला और त्रिपुरा को अपने अधीन कर लिया । समस्त गौड़, वारेन्द्र उत्तरी राढ़ तथा वंग-समतट ये समस्त क्षेत्र पुनः पालसत्ता के अधीन हो गये । महीपाल के ही काल में चोलों का बंगाल पर आक्रमण हुआ, जिसका नेतृत्वकर्ता राजेन्द्र चोल था । चोल आक्रमण का बंगाल पर कोई स्थायी प्रभाव नहीं पड़ा, क्योकिं महीपाल ने चोल सेना को गंगापार नहीं बढ़ने दिया ।

महीपाल, देवपाल के पश्चात् पाल वंश का सबसे प्रमुख शासक सिद्ध हुआ । अपने पूर्वजों द्वारा खोये हुए क्षेत्रों पर पुनः अधिकार कर महीपाल ने पाल साम्राज्य की खोयी प्रतिष्ठा पुनः स्थापित की । महीपाल बौद्ध धर्म का अनुयायी था, उसने बनारस, सारनाथ, बोधगया, नालन्दा में अनेकों बौद्ध विहार एवं हिन्दू मंदिरों का निर्माण करवाया । उसने महीपुर नामक नये नगर को स्थापित किया । मुर्शिदाबाद के अनेकों सरों का नाम उसके नाम पर रखा गया है । आज भी बंगाल में उसके नाम की कई अनुश्रुतियाँ प्रचलित है । महीपाल की मृत्यु के पश्चात् पालों का पतन प्रारम्भ हो गया । महीपाल द्वारा स्थापित पाल वंश की गरिमा एवं प्रतिष्ठा को उसके अयोग्य उत्तराधिकारी जीवित नहीं रख सके ।

नयपाल-

महीपाल के पश्चात् उसके पुत्र नयपाल ने पाल सत्ता की बागडोर संभाली । नयपाल ने १५ वर्षों तक शासन किया । नयपाल के ही काल में कलचुरी शासक कर्ण ने पाल क्षेत्रों पर आक्रमण किया, जिसकी पुष्टि तिब्बती अनुश्रुतियों से होती है । युद्ध के प्रारम्भ में कलचुरी सेनाएं विजयी हुयी तथा बौद्ध स्थलों को क्षति पहुंचाई, परन्तु अंत में कलचुरी सेनाओं को नयपाल से पराजित होना पड़ा

। अंततः कलचुरी शासक कर्ण एवं नयपाल के बीच संधि हुई, जिसमें बौद्ध विद्वान दीपंकर श्रीज्ञान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । नयपाल ने हिन्दुओं के तीर्थस्थल गया का पुनर्रुद्धार करवाया ।

विग्रहपाल-III

विग्रहपाल के काल में भी कलचुरी शासक कर्ण ने पाल क्षेत्रों पर आक्रमण किया। रामचरित में कहा गया है की विग्रहपाल ने कर्ण को पराजित किया था । पराजित कर्ण ने अपनी पुत्री यौवनश्री एवं विग्रहपाल का विवाह करा मित्रता स्थापित की । विग्रहपाल-III के ही काल में कल्याणी के चालुक्य नरेश विक्रमादित्य ने बंगाल पर आक्रमण किया जिसमें गौड़ नरेश को पराजित हुआ । उड़ीसा के महाशिवगुप्त ययाति और **उद्दोतकेसरी** नामक राजाओं ने भी इसी काल में बंगाल पर आक्रमण किया । इन आक्रमणों के परिणामस्वरूप समस्त बंगाल पालों के अधिकार क्षेत्र से निकल गया । विग्रहपाल भी बौद्ध धर्मानुयायी था । वह एक धर्मसहिष्णु शासक था । उसने सूर्यग्रहण अठाव चंद्रग्रहण के अवसर पर गंगा में स्नान किया और सामदेव पंडित ब्राह्मण को एक ग्राम दान दिया । विग्रहपाल की मृत्यु के पश्चात् पाल साम्राज्य का पतन तेजी से प्रारम्भ हुआ ।

विग्रहपाल की मृत्यु के पश्चात्, सत्ता को लेकर उसके उत्तराधिकारियों महीपाल-II, सूरपाल, रामपाल के बीच गृहयुद्ध शुरू हो गया । महीपाल-II अपने दोनों छोटे भाइयों सूरपाल एवं रामपाल को कारागार में डालकर स्वयं सिन्हासनारूढ़ हुआ । दिव्योक नामक कैवर्त्त कबीले के सरदार ने महीपाल के विरुद्ध विद्रोह कर दिया, जिसमें महीपाल मारा गया ।

रामचरित से जानकारी मिलती है कि महीपाल के पश्चात् बंगाल का शासक रामपाल हुआ । सूरपाल के विषय में कोई भी जानकारी नहीं प्राप्त है । कैवर्त्तों द्वारा स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लेने के पश्चात् रामपाल के अधिकार क्षेत्र में केवल मगध और राढ़ के ही कुछ भाग रह गये । अपने पुत्रों, मंत्रियों एवं सहायकों की सहायता से कैवर्त्त नामक कबीलों को पराजित कर रामपाल ने अपने खोये हुए क्षेत्रों को पुनः प्राप्त किया । पूर्व में कामरूप और दक्षिण-पश्चिम में उड़ीसा पर अपनी राजनीतिक प्रतिष्ठा स्थापित करने के प्रयासों द्वारा उसने अपने वंश के राजनीतिक गौरव की स्मृति दिलाई । रामपाल ने रामवती नामक एक नए नगर की स्थापना करवाई तथा इस नगर को बौद्ध एवं हिन्दू मूर्तियों से सजाया गया । संध्याकरनंदी के रामचरित में रामपाल के जीवनचरित एवं कुरु की प्रशंसा का वर्णन मिलता है । ११२० ई० में रामपाल की मृत्यु हो गयी ।

रामपाल का पाल साम्राज्य की प्रतिष्ठा पुनः स्थापित करने का प्रयास क्षणभंगुर साबित हुआ । रामपाल के पश्चात् कुमारपाल सिंहासन पर बैठा जो की रामपाल का तृतीय पुत्र था । उसी समय असम के अधीनस्थ शासक तिंग्यदेव ने विद्रोह कर दिया जिसे कुमारपाल ने वैद्धदेव की सहायता से दबाया । कुमारपाल के उपरांत क्रमशः गोपाल-III, मदनपाल तथा गोबिंदपाल ने पाल वंश की सत्ता संभाली । मदनपाल के ही समय में संध्याकरनंदी ने रामचरित लिखा । मदनपाल के काल में पूर्वी बंगाल में सेनवंश ने अपनी सत्ता स्थापित कर ली । मदनपाल अपने शासन के अंतिम दिनों में केवल बिहार के मध्य भाग में एक छोटे से भाग का शासक रह गया। मदनपाल के पश्चात् गोविन्दपाल शासक हुआ, यह पाल वंश का अंतिम शासक स्वीकार किया जाता है ।

निष्कर्ष-

पालवंशीय शासकों ने अपनी योग्यता एवं कौशलता के माध्यम से राजनीतिक सत्ता का विस्तार कर भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय जोड़ दिया । पालों ने एक लंबे समय (चार शताब्दियों) तक बंगाल पर शासन किया, इनका शासनकाल भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है । पाल साम्राज्य में एक सुव्यवस्थित शासन व्यवस्था दृष्टिगोचर होती है । इस वंश के शासकों ने भारतीय इतिहास में अपना राजनैतिक एवं सांस्कृतिक योगदान दिया । पाल शासकों की कुशलता एवं राजनैतिक क्षमता के परिणामस्वरूप बंगाल उस समय भारत के शक्तिशाली राष्ट्रों में से एक बन गया । पालों का शासन न केवल राजनीतिक दृष्टिकोण से बल्कि सांस्कृतिक दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण था । पाल वंश के लगभग सभी शासक बौद्ध धर्मानुयायी थे, इनकी नीतियां धर्मनिरपेक्ष थी । पाल शासको ने बौद्ध धर्म को बढ़ावा दिया एवं उनका प्रचार-प्रसार किया । ओदंतपुरी, विक्रमशिला के विश्वविद्यालयों का निर्माण पाल शासकों ने करवाया जिनका यश दूर-दूर तक फैला हुआ था । प्रो० एम एन घोष के शब्दों में- पाल शासन के अंतर्गत न केवल बंगाल की गणना सबसे बड़ी शक्तियों में की जाने लगी, अपितु वह बौद्धिक एवं कला सम्बन्धी क्षेत्रों में भी उत्कृष्ट हो गया । गोपाल द्वारा स्थापित साम्राज्य की राजनीतिक सत्ता का चरमोत्कर्ष धर्मपाल, देवपाल एवं महीपाल के शासनकाल में देखने को मिलता है । इन शासकों ने बंगाल को एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में स्थापित किया, परन्तु इनके उत्तराधिकारियों के काल में पालों की स्थिति शोचनीय हो गयी । पाल नरेश अब नाम मात्र के शासक रह गये । इसका एक प्रमुख कारण था उस समय उभरती हुयी नई शक्तियां जिहोनें पाल साम्राज्य पर समय-समय पर आक्रमण किया । धीरे-धीरे पाल वंश पतन की ओर अग्रसर हुआ । पाल वंश का पतन सामंतों के विद्रोंह, अयोग्य परवर्ती पाल शासक तथा सेन वंश के उत्कर्ष के कारण हुआ ।

निष्कर्षतः एक जनसामान्य द्वारा स्थापित पाल वंश ने भारतीय इतिहास में एक सशक्त राजनैतिक शक्ति के रूप में अपनी छाप छोड़ी तथा इतिहास में सर्वाधिक अवधि तक शासन करने वाले राजवंशों में से एक बन गया ।

सन्दर्भ

1ण पाठक, डॉ विशुद्धानंद : उत्तर भारत का राजनीतिक इतिहास (६००-१२००ई० उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ-२२६००१

2ण विद्यालंकार,सत्यकेतु : प्राचीन भारत (प्रारम्भ से १२०० ईस्वी तक) श्री सरस्वती सदन ए-1/132, सफदरजंग इन्क्लेव, नई दिल्ली-110029

3ण सिंह, डॉ नम्रता : मध्यकालीन भारत में नगरीकरण यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली-110002

4ण चौधरी, हेमचन्द्र राय : डाइनेस्टिक हिस्ट्री ऑफ नार्दर्न, इण्डिया, 2 जिल्दों में, कलकत्ता १९३१, १९३६ ।

5ण अल्तेकर, अनंत सदाशिव : राष्ट्रकूट्ज़ एण्ड देयर टाईम्स, पूना, १९३४

6ण डंरनउकंतए त्ण्ब रू ।दबपमदज प्दकपं डवजपसंस ठंदंतेपकेंण चचण्268. ैठछ 978.81.208.0436.4

7ण ैमदएैपसमदकत छंजी रू ।दबपमदज प्दकपंद भ्पेजवतल ंदक ब्अपसम्रंजपवद छमू ।हम प्दजमतदंजपवदंसण चचण 280 दृ ैठछ 978.81.224.1198.0

8ण तंर ज्ञनउंत रू म्ेंले वद ।दबपमदज प्दकपं क्पेबवअमतल च्नइसपीपदह भ्वनेमण चण 199 ैठछ 978.81.7141.682.0

9ण ैतपदपअें डण्छण रू ैवबपंस बिंदहम प्द डवतकमतद प्दकपं व्तपमदज ठसंबोंदण च्ण 9ण ैठछ 978.81.250.0422.6